एक महिला की आवाज
ऐसा तो बहुत घर मिलेगा। बहुत मुश्किल है। पर सरकार को तो सब मालुम है सरकार आप लोगों को भेजते है कि जाओ पर आप लोग क्या करोगे। कुछ करिये तब न। आदमी को सोचना चाहिए कि कुछ मदद करायें। तो समझों कि हमारा एक लड़का है और चार लड़की है अब बताओ एक लड़का क्या करे हां। आठ नौ आदमी का खर्चा। और जो बड़े आदमी है उनसे क्या मतलब। उनके दरवाजे पर कोई जाए भी तो दश रुपईया ना देइ है। 3 तो सोचेंगे कि और मजूरी इनको कम से कम दे। अब इनको देखिये ये बिने लायक नहीं है कितने कमजोर है।

प्र: हां ठिक ?
ज: रात भर कराहते हैं अब का करियेगा पेट तो है न एक बेना नहीं तो दूसरी बेला चाहिए ही है। अब हम लोगों का रमजान का महिना आवे वाला है उसमें काफी खर्चा है। कौन तरे आदमी जीये। बड़े आदमी है वे कोई ध्यान नहीं करते खुद अच्छा पहनते है अच्छा खाते हैं। बड़ी गरीब की परेशानी है।

प्र: शुरू से यहीं स्थिति है कि इधर चार-पाँच सालों में ऐसा हुआ ?
ज: ये हमेशा से यही है, मंहगाई बढ़ती जाती है लेकिन मजूरी नहीं बढ़ी अगर मजूरी बढ़ जाये यदि 600 की जगह 800 दो तो बात बनें।

प्र: अच्छा बनारसी साड़ी का दाम घटा है कि बढ़ा ?
ज: ये तो गद्दीदार बता सकते हैं हम लोग क्या जानें जिसको बेचते हैं वहीं सकता वो लोग तो यही कहते हैं कि साड़ी का दाम गिरा है बिकती नहीं है। साल भर जो लड़ाई हुई अहमदा बाद में उसी से कार-बार में फर्क पड़ा है स ब काम बंद है।

प्र: कितन आर्डर नहीं जा सके ?
ज: नहीं, वहाँ से जो महाजन आते थे वो लड़ाई की वजह से नहीं आ सके और माल जा ही नहीं सका। अब

एकेटुके है जिनका बिना नहीं रहा है, माल बिकेगाा ही नहीं तो बनेगाा क्या।